© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रामबली यादव
शोध–निर्देशक

चन्द्र प्रकाश यादव
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

शोध आलेख सार – प्रस्तुत अध्ययन वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के उद्देश्यों में समायोजन एवं उनकी विमाओं संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। समायोजन से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डॉ0 आर0 पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता एवं संवेगात्मक समायोजन वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया जबकि सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में समानता पायी गयी।

मुख्य शब्द– वित्तपोषित, स्ववित्तपोषित विद्यालय, विद्यार्थी, समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक, समायोजन।

प्रस्तावना– समायोजन एक अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अंदर उपस्थित गुणों को संगाठित कर अपने जीवन मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करता है। शैक्षिक रुचि एवं समायोजन का सीधा सम्बंध व्यक्ति की योग्यता व उसकी उपलब्धि से होता है जो व्यक्ति अपनी परिस्थितियों को अपने अनुसार या स्वंय को परिस्थितियों के अनुसार ढालकर सामंजस्य स्थापित कर लेता है तो वह व्यक्ति अपनी योग्यता व उपलब्धि स्तर का सही प्रदर्शन कर सकता है। व अपने आप का समायोजन कर लेता है जबकि इसके विपरीत स्थिति होने पर व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो जाता है।

अतः कैन्डिल का यह विचार सर्वथा सत्य है कि बालक के शैक्षिक विकास को शैक्षिक प्रगति प्रभावित करती है जिस पर सभी कारक, प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर धनात्मक प्रभाव डालते है।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को उपयोगी बनाने के लिये शिक्षा के माध्यम का शैक्षिक रुचि व समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन विषय पर कार्य करने की आवश्यकता महसूस की।

हर दृष्टि से सम्पन्न होने के बावजूद हमारे देश के विश्व के सम्पन्न देशों के सामने न टिक पाने का कारण, सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, एवं मानवीय संसाधनों का सही दिशा में विकास न हो पाना है। वैश्वीकरण के इस युग में सतुंलित व्यक्तियों का निर्माण करना, प्रगति की आवश्यकताओं के अनुकूल उन्हें श्रेष्ठतम् बनाने की महती आवश्यकता है।

किशोर किसी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। किशोरों का विकास राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान करता है और समाज को अच्छे नागरिक देता है। किशोरों को उनके विकास के लिये मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है। इसलियें किशोरों की समस्या कक्षा एवं विद्यालय की प्रमुख समस्या है। यदि उन्हें सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाता तो उनके गलत रास्ते पर चलने तथा समाज विरोधी होने की संभावनाये बढ़ जाती है।

इसलिये प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षक, अभिभावक तथा किशोरों की स्थिति को समझने तथा उनको सही दिशा देने में सहयोगी हो सकता है। आज समाज में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों की स्थापना हो रही है जिनकी अपनी शिक्षण व्यवस्था है और अपने निश्चित मापदण्ड है। उनके बीच रहकर विद्यार्थी यह नहीं समझ पाता है। कि वह किस माध्यम के विद्यालयों में प्रवेश ले जिससे उसे अच्छी शिक्षा मिल सके व उनका उपलब्धि स्तर भी अच्छा रहे। भाषा या माध्यम का चयन शिक्षार्थी की व्यक्तिगत पसन्द या नापसन्द पर आधारित होना चाहिए क्योंकि यदि शिक्षार्थी को ये अधिकार प्राप्त होगा तभी वह अपने आपको उस परिस्थिति में समायोजित कर पायेगा किन्तु भाषा माध्यम के चयन में सबसे बड़ी कठिनाई ये सामने आती है कि माध्यम चयन का आधार क्या हो?

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों को दिशा मिलेगी कि –

1. क्या वास्तव में विद्यार्थी अधिक समय, शक्ति व ऊर्जा व्यय करके वित्तपोषित विद्यालयों में शिक्षा का अच्छा स्तर प्राप्त कर रहे है। या स्ववित्तपोषित माध्यम के विद्यालयों में?
2. क्या अनुकूल वातावरण के अनुसार समायोजन पर बालक के कार्य सम्पादन की दक्षता बढ़ जाती है?
3. क्या माध्यम बालक के समायोजन को प्रभावित करता है?
4. क्या समायोजन होने पर बालक की उपलब्धि महत्तम हो जाती है?

समस्या कथन–

''वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

उपकरण–

समायोजन से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_1 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है।

H_{01} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी– अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	वित्तपोषित	50	32.38	6.91	3.46	1.55	2.23	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	स्ववित्तपोषित	50	35.84	8.51					

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान क्रमशः 32.38 एवं 35.84 है और मानक विचलन क्रमशः 6.91 तथा 8.51 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 2.23 है जो स्वतंत्रांश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 1.98 से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_2 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

H_{02} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 2

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी– अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम

1	वित्तपोषित	50	11.40	4.11	1.82	0.87	2.09	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	स्ववित्तपोषित	50	13.22	4.55					

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 11.40 एवं 13.22 है और मानक विचलन क्रमशः 4.11 तथा 4.55 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 2.09 है जो स्वतंत्रांश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 1.98 से अधिक है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में संवेगात्मक समायोजन क्षमता वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_3 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

H_{03} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 3

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी–अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	वित्तपोषित	50	10.44	3.14	0.78	0.65	1.18	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	स्ववित्तपोषित	50	11.22	3.43					

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 10.44 एवं 11.22 है और मानक विचलन क्रमशः 3.14 तथा 3.43 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 1.18 है जो स्वतंत्रांश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 1.98 से कम है, अतः 0. 05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर निरस्त की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर नही है,* स्वीकृत की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन क्षमता समान है।

4. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_4 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर है।

H_{04} वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 4

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	टी–अनुपात **(t-value)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	वित्तपोषित	50	10.54	3.75	0.86	0.81	1.06	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	स्ववित्तपोषित	50	11.40	4.36					

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 10.54 एवं 11.40 है और मानक विचलन क्रमशः 3.75 तथा

4.36 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 1.06 है जो स्वतंत्रांश 98 पर 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्वि पुच्छीय परीक्षण हेतु सारणी मान 1.98 से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर निरस्त की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नही है,* स्वीकृत की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन क्षमता समान है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर है अर्थात् स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन क्षमता वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समानता है।

अतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया इसका कारण यह हो सकता है स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में संसाधनों की अधिकता, बच्चों को शिक्षकों द्वारा अभिप्रेरित करना तथा उनमें अनुशासन अधिक होने के साथ–साथ विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होना तथा उनके पारिवारिक वातावरण के साथ–साथ अभिभावकों एवं माता–पिता का सहयोग प्राप्त होना वहीं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में संसाधनों की कमी, सभी विषयों के शिक्षकों की कमी एवं अनुशासन की कम विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में कमी का कारण हो सकता है जिसके कारण विद्यार्थियों विद्यालय में बहुत कम आते है एवं आते भी है तो वे आधी समय में विद्यालय छोड़कर घूमने जाते हैं या अपने घर चले जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अनिता (2014).** कार्यकारी व ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान
2. **ओमप्रकाश (2013).** माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्म–प्रत्यय एवं समायोजन का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

3. **इन्दौरिया, गिरिजा (2014).** शेखावटी क्षेत्र की कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान।
4. **कुमारी, पुष्पा (2016).** माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान
5. **पॉलिवाल, राजेश (2004).** ए स्टडी ऑफ पसनॉलिटी एण्ड एडजेस्टमेन्ट ऑफ फिमेल स्टूडेन्ट्स ऑफ डिफरेन्ट कटेगरी, पी–एच.डी. एजूकेशन, बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी, झाँसी
6. **प्रसाद, हरी (2012).** माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, फैजाबाद : डॉ0 राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय।
7. **सिम एवं बंग (2016).** इमोशनल इंटेलिजेन्स, स्ट्रेस कोपिंग एण्ड ऐडजेस्टमेन्ट टू कॉलेज लाइफ इन नर्सिंग स्टूडेन्ट्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ बॉयो–साइंस एण्ड बॉयो–टेक्नोलॉजी, 8(3), पृ0 21–32
8. **सिंह, रतन (2016).** ए स्टडी ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स ऐडजेस्टमेन्ट इन रिलेशन टू देयर इमोशनल इंटेलिजेन्स, एपरा, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एण्ड बिजनेस रिव्यू, 4(5), पृ0 86–89